VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 4

विमर्श

रेल, महात्मा गांधी और रंगबिरंगी भारतीयता

■ **चंदन श्रीवास्तव**
वरिष्ठ पत्रकार एवं शोधार्थी

तीन साल पहले अपनी उम्र के 160 साल पूरे कर चुकी भारतीय रेल लोगों और सामानों को दैनंदिन उनके नियत ठिकानों तक पहुंचाने का विशाल-तंत्र मात्र नहीं है। वह भारत के समान ही एक जीवंत धारणा है और भारतीय राष्ट्र की कोई भी कल्पना भारतीय रेल के बगैर अधूरी है।

मिसाल के लिए गांधी को ही लें। गांधी राष्ट्रपिता कहलाते हैं, और राष्ट्रपिता की संघर्ष-यात्रा का कोई भी महत्वपूर्ण पड़ाव अपने पार्श्व में भारतीय रेल को खड़ा किए बगैर शायद ही संभव हुआ हो। गांधी ने गोखले को अपना गुरु माना था और कथा है कि इस गुरु के कहने पर गांधी देश की आजादी की अपनी राजनीति शुरू करने से पहले 1915 में 'भारत' से भेंट करने को निकले। असल भारत से गांधी की भेंट देश में पूरब को पश्चिम से और उत्तर को दक्षिण से जोड़ने वाली रेलगाड़ियों के जरिए हुई थी। छोड़ दें गांधी से रेलयात्रा के दौरान घटी दक्षिण अफ्रीका की उस मशहूर रंगभेदी घटना को, ऐन भारत में भी गांधी-कथा के कुछेक महत्वपूर्ण पड़ावों को उनकी रेल-यात्रा के बगैर सोचना मुश्किल है।

2016 में चंपारण के किसान राजकुमार शुक्ला से कांग्रेस के सालाना जलसे में भेंट हुई और बलात नील की खेती में जोत दिए गए किसानों के दुख से गांधी अवगत हुए। गांधी और राजकुमार शुक्ला कलकत्ते से पटना रेलगाड़ी पर सवार होकर पहुंचे थे। यह यात्रा गांधी के चंपारण-आंदोलन की पीठिका बनी और इस यात्रा ने गांधी को दो विश्वस्त सहयोगी राजेन्द्र प्रसाद तथा जेबी कृपलानी के रूप में दिए। बाल गंगाधर तिलक के निधन (1920) के बाद गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की राजनीति एक नये युग में प्रवेश करती है। इस साल गांधी अखिल भारतीय होमरूल लीग के अध्यक्ष बने और उमस और गर्मी से भरे सात महीनों में भारत के कई कोनों की यात्रा की। तब रेलगाड़ियों ने भारतीय मानस में एक नयी जगह बनायी थी। हजारों की भीड़ रेलवे स्टेशनों पर गांधी की एक झलक पाने के लिए इंतजार में बैठी रहती थी।

ऐसी ही एक यात्रा में लोगों ने स्टेशन मास्टर को सूचित किया कि महात्मा गांधी को ले जाने वाली रेलगाड़ी अगर स्टेशन पर नहीं रुकी तो हमलोग रेल की पटरियों पर लेट जायेंगे। चाहे नमक सत्याग्रह के दिन हों जब जेल में बंद गांधी से भेंट करने के लिए लार्ड इर्विन के कहने पर आनन-फानन में मोती लाल नेहरू, जवाहर लाल नेहरू और सैयद मोहम्मद को स्पेशल ट्रेन के जरिए पहुंचाया गया या फिर दूसरे विश्वयुद्ध का समय जब बलात भारत पर अंग्रेजों ने यह युद्ध थोप दिया था और लार्ड लिनलिथगो ने गांधी को वार्ता के लिए शिमला बुलाया, रेलगाड़ी गांधी की संघर्ष-कथा में एक अहम किरदार की तरह शामिल रही। शिमला जाने के लिए गांधी जब दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी में सवार हुए तब उन्हें देखने के लिए जमा भीड़ चिल्ला रही थी-'हमलोग कोई समझौता नहीं चाहते।'

जीवन ही नहीं गांधी की मृत्यु का प्रसंग भी भारतीय रेलवे से नाभि-नाल बंधा है। एक विशेष रेलगाड़ी तैयार हुई थी, पांच तीसरे दर्जे के डिब्बे लगे थे और इसी पर प्रयाग में गांधी के

VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 5

अस्थिकलश को विसर्जन के लिए ले जाया गया। रेलगाड़ी 11 फरवरी 1948 को दिल्ली से रवाना हुई, रास्ते में कुल ग्यारह स्टेशनों पर रुकी और हर स्टेशन पर गांधी की इस अंतिम यात्रा को देखने के लिए ठट्ट की ठट्ट भीड़।

खासा प्रतीकात्मक ही था यह सब, आखिर गांधी को रेल यात्रा में तीसरे दर्जे में चलना सबसे पसंद जो था। गांधी जनसाधारण की जागृति और शक्ति के प्रतीक थे और भारतीय रेल भी दरअसल अपने प्राथमिक अर्थों में जनसाधारण की ही सवारी है। रेल की यात्रा में शुरू से अब तक सबसे कम समय में सबसे दूर की जगह पर पहुंच जाने पर उतना जोर नहीं रहा जितना ज्यादा से ज्यादा लोगों को कम से कम खर्च और बुनियादी सुविधा के साथ अपने गंतव्य तक पहुंचाने पर। अपने इस रूप में भारतीय रेल व्यक्तिवादिता का नहीं, सामूहिकता का उद्घोष है, एक रंग-बिरंगी सामूहिकता का, जिसमें हिन्दू के बगल में ईसाई और मुसलमान उसी भाव से अपनी गठरी समेटे स्टेशन के आने का इंतजार करते हैं जिस भाव से कोई मध्यवर्गीय पढ़ा-लिखा नौजवान बासी अखबार पढ़ते हुए किसी निरक्षर ग्रामीण बुजुर्ग के होठों पर बुदबुदाहट की शक्ल में फूटने वाली हनुमान चालीसा को सुनते हुए अपने गंतव्य के आने की बाट जोहता है।

बड़ी शिकायतें हैं भारतीय रेल की- समय से बहुत लेट चलती है रेलगाड़ियां, आरक्षित श्रेणी के डिब्बे में अनधिकृत भी कोई घुसा चला आता है, आरक्षित श्रेणी के टिकट बहुत मगजमारी के बाद भी नहीं मिलते, रेल के ट्रैक से लेकर पुल-पुलिया तक पुराने हैं और हमेशा सुरक्षा को लेकर सवाल उठाये जाते रहे हैं।

इन शिकायतों को एक तरफ परे करके कभी सोचिएगा कि क्या भारत देश में ऐसी भी कोई सवारी है जो रंग-बिरंगी भारतीयता का भार उसकी भरपूर साधारणता और विशिष्टता के साथ संभालते हुए पूरे भारतीय भूगोल में अनथक ढोती-पहुंचाती हो। कतार में खड़ा अंतिम आदमी इस देश की नैतिकता की अंतिम कसौटी है और भारतीय रेल इस अंतिम आदमी को हासिल एक हौसला कि वह देश के जिस कोने में जाना चाहेगा, समदर्शिता के भाव से रेलगाड़ियां उसे पहुंचायेंगी ताकि वह पूरे विश्वास से कह सके कि भारत के इस कोने की मिट्टी भी आखिर मेरे ही मन और काया की मिट्टी है। भारतीय रेल ने भारतीयता के रूपक का लगातार 163 सालों तक निर्वाह किया है और आगे भी यह सफर अविरत जारी रहेगा। ■

कतार में खड़ा अंतिम आदमी इस देश की नैतिकता की अंतिम कसौटी है और भारतीय रेल इस अंतिम आदमी को हासिल एक हौसला कि वह देश के जिस कोने में जाना चाहेगा, समदर्शिता के भाव से रेलगाड़ियां उसे पहुंचायेंगी ताकि वह पूरे विश्वास से कह सके कि भारत के इस कोने की मिट्टी भी आखिर मेरे ही मन और काया की मिट्टी है।